RNI NO. MPHIN/2022/85285
डाक पंजी. क्र.- MP/KDW/93/2023-24
Email id: haldharkisankgn@gmail.com

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र

हलधर किसान

वर्ष 02 अंक 10 | दिसंबर 2023 | पृष्ठ- 8 मूल्य- 5.00 रुपए

देशभर में 15.5 करोड़ किसानों पर 21 लाख करोड़ का कर्ज, तमिलनाडु में सर्वाधिक

हलधर किसान देश के किसानों पर व्यावसायिक, सहकारी और क्षेत्रीय बैंकों का करीब 21 88174 02860 लाख करोड़ रुपये का कर्ज बकाया है। कर्जदार खाताधारकों की संख्या तमिलनाडु में सर्वाधिक 2.79 करोड़ है। इन खाताधारकों के करीब 3.47 लाख करोड़ रुपये बकाया हैं। यह आंकड़े राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने प्रस्तुत िए है। नाबार्ड के अनुसार कर्नाटक के 1.35 करोड़ खाताधारकों पर करीब 1.81 लाख हजार करोड़ रुपये की देनदारी है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, तेलंगाना, केरल और आंध्र प्रदेश के किसानों पर एक लाख करोड़ रुपये से अधिक कर्ज बकाया है। 2.95 लाख रुपये के साथ प्रति खाताधारक औसत कर्ज के मामले में पंजाब पहले स्थान पर और 2.29 लाख रुपये के साथ गुजरात दूसरे स्थान पर है। हरियाणा और गोवा के प्रति खाताधारक किसान पर दो लाख रुपये से अधिक का कर्ज है।केंद्र शासित प्रदेशों में दादर एवं नगर हवेली के प्रति खाताधारक पर सर्वाधिक चार लाख रुपये से अधिक बकाया हैं। इसके बाद दिल्ली के खाताधारकों पर कर्ज 3.40 लाख रुपये, चंडीगढ़ में 2.97 लाख व दमन.दीव में 2.75 लाख रुपये है। कुल कर्ज के लिहाज से देखा जाए तो पंजाब देश का सबसे बड़ा कर्जदार राज्य है। पंजाब ने अपनी जीडीपी का 53.3 फीसदी तक कर्ज ले रखा है। रिजर्व बैंक के मुताबिक, किसी भी राज्य का कर्ज उसकी जीडीपी के 30 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। राज्य की आय का एक बड़ा हिस्सा कर्ज चुकाने में खर्च हो रहा है। राज्य के बजट के अनुसार, जीएसडीपी के लिए प्रभावी बकाया ऋण 2023.24 में 46.81 फीसदी होने का अनुमान लगाया गया है। एक अधिकारी ने बताया कि लोकप्रिय घोषणाओं याने कर्जमाफी जैसी योजनाओं से कर्ज बढ़ता रहा है। यह बढ़कर 2.52 लाख करोड़ से अधिक हो गया है। पंजाब और हरियाणा अपनी कमाई का 21 फीसदी हिस्सा ब्याज में चुका रहे हैं, जो देश में सर्वाधिक है।

डिसक्लेमर: उपर व्यक्त विचार कार्टूनिस्ट के स्वयं के है।

राज्यों के ऋण में गिरावट का अनुमान

भारतीय रिजर्व बैंक ने स्टेट फाइनेंसेज ए स्टडी ऑफ बजट्स ऑफ2022.23 शीर्षक से प्रकाशित एक अध्ययन में सभी राज्यों के सम्मिलित जीडीपी के अनुपात में राज्यों के ऋण में गिरावट का अनुमान जताया है। रिपोर्ट के मुताबिक, राज्यों पर कर्ज का कुल दबाव 2021.22 के जीडीपी के 31.1 फीसदी से घटकर 2022.23 में जीडीपी का 29.5 फीसदी रह गया है। भारत के किसान कृषि कार्यों के उद्देश्य से व्यवसायिक, सहकारी एवं क्षेत्रीय बैंकों से कर्ज लेते हैं। किसानों पर इन बैंकों का करीब 21 लाख करोड़ रुपए का कर्ज बकाया है। गौरतबल है कि भारत के बहुत से किसान संस्थागत बैंकों से कर्ज नहीं ले पाते। उन्हें साहूकारों अथवा सूदखोरों से मोटी ब्याज दर पर कर्ज लेना पड़ता है। इस कर्ज का कोई आधिकारिक रिकॉर्ड नहीं है।

2022 में कृषि क्षेत्र में बढ़ी आत्महत्याएं, 11,290 किसानों के साथ कृषि श्रमिको ने दी जानः एनसीआरबी

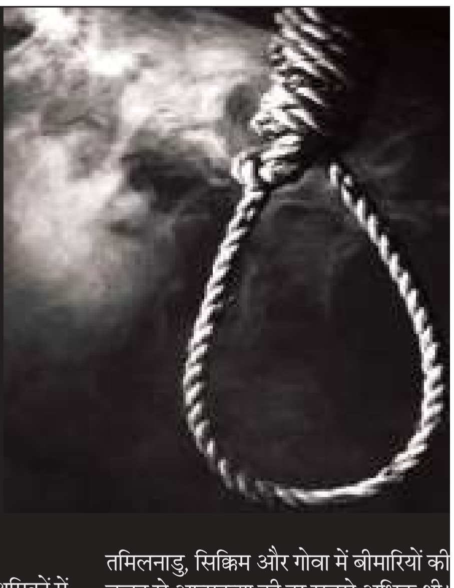

हलधर किसान। कृषि क्षेत्र में आत्महत्या 2022 में बढ़ी है। साल 2021 में 10,881 किसानों व कृषि श्रमिकों के मुकाबले साल 2022 में 11,290 किसानों व कृषि श्रमिकों ने जान दी। कृषि क्षेत्र में आत्महत्या में यह वृद्धि मुख्य रूप से कृषि श्रमिकों की अधिक आत्महत्या के कारण हुई है, जबकि किसानों की आत्महत्या में मामूली गिरावट दर्ज की गई है। कृषि क्षेत्र में महाराष्ट्र (4,248 आत्महत्या) कर्नाटक (2,392 आत्महत्या) और आंध्र प्रदेश (917 आत्महत्या) में सर्वाधिक आत्महत्या दर्ज की गई। साल 2022 में आत्महत्या करने वाले 5,207 किसानों में 4,999 पुरुष जबकि 208 महिलाएं थीं। वहीं आत्महत्या करने वाले 6,083 कृषि श्रमिकों में 5,472 पुरुष और 611 महिलाएं शामिल थीं।

यह आंकड़े राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की ताजा रिपोर्ट में जारी किए गए है। 4 दिसंबर को जारी एक्सीडेंटल डेथ्स एंड स्यूसाइड्स इन इंडिया 2022 के अनुसार साल 2022 में अखिल भारतीय आत्महत्या दर (एक लाख की आबादी पर आत्महत्या) 12.4 रही जो इससे पहले 12 थी। 2022 में सर्वाधिक आत्महत्या दर वाले राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में सिक्किम (43.1) अंडमान एवं निकोबार द्वीप (42.8), पुदुचेरी (29.7), केरल (28.5) और छत्तीसगढ़ (28.2) शामिल हैं। देशभर के 19 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में आत्महत्या दर राष्ट्रीय औसत से अधिक रही जबकि 17 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में यह दर राष्ट्रीय औसत से कम थी। इस मामले में सबसे बेहतर स्थिति बिहार, मणिपुर, नागालैंड, जम्मू.कश्मीर, लक्षद्वीप और उत्तर प्रदेश की रही।

एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, देशभर में हुई 18.4 प्रतिशत आत्महत्याओं की वजह बीमारियां रहीं। 12 राज्यों में व केंद्र शासित प्रदेशों में बीमारियों की वजह से आत्महत्या की दर राष्ट्रीय औसत से अधिक रही। अंडमान एवं निकोबार द्वीप, पंजाब, तमिलनाडु, सिक्किम और गोवा में बीमारियों की वजह से आत्महत्या की दर सबसे अधिक थी। रिपोर्ट के अनुसार, पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, उत्तराखंड, गोवाए मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, चंडीगढ़, लक्षद्वीप व पुदुचेरी में कृषि क्षेत्र से संबंधित कोई आत्महत्या दर्ज नहीं की गई।

खेती का लाभदायक ना होना, किसानों व खेत मजदूरों की आत्महत्या का कारण है। खेती की बढ़ती लागत और तुलनात्मक रूप से फसल की कम कीमतों के कारण आय और व्यय का बढ़ता अंतर खेती परिवारों को आर्थिक संकट की ओर धकेल रहा है। ऐसे में किसानों व मजदूरों को गंभीर संकट का सामना करना पड़ रहा है। छोटे और सीमांत किसान खेती छोड़ने को मजबूर हैं। भारत में हर दिन 2,500 किसान खेती छोड़ देते हैं। केवल राजनीतिक नारों या आँकड़ों में हेरफेर करने से किसान आत्महत्या की समस्या का समाधान नहीं होगा।

आर्थिक नीतियां लागू होने के बाद भी बढ़ी आत्महत्याएं

भारत में बड़े पैमाने पर आत्महत्या का चलन नई आर्थिक नीतियों के लागू होने के बाद 1990 के दशक के अंत से ही देखा जा सकता है। एनसीआरबी के अनुसार, 1997 से 2006 के बीच भारत में 1095219 लोगों ने आत्महत्या की। इसमें से 166304 किसान शामिल हैं। यह आंकड़ा अब बढ़कर करीब साढ़े चार लाख हो गया है। पिछले वर्षों की रिपोर्टों के अनुसार, किसानों में आत्महत्या की दर बाकी आबादी की तुलना में बहुत अधिक है। जहां आम जनसंख्या में प्रति एक लाख पर 10,6 लोग आत्महत्या करते हैं, वहीं किसानों में प्रति एक लाख पर 15,8 आत्महत्या की घटनाएं होती हैं। इसके बाद किसान की परिभाषा में बदलाव कर आत्महत्याओं की संख्या को कम करने का प्रयास किया गया। दरअसल, एनसीआरबी की रिपोर्ट मुख्य रूप से पुलिस रिकॉर्ड पर आधारित होती है। बड़ी संख्या में आत्महत्या के मामले पुलिस रिकॉर्ड में नहीं हैं क्योंकि लोग कानूनी जटिलताओं से बचने के लिए पोस्टमार्टम या पुलिस नोटिस के बिना दाह संस्कार करते हैं। नतीजतन, आत्महत्याओं की संख्या वास्तव में जितनी है उससे बहुत कम दिखाई जाती है। आंकड़ों के मुताबिक, भारत में हर घंटे औसतन दो किसान आत्महत्या कर रहे हैं। यदि पंजाब की तरह अन्य राज्यों में भी सर्वेक्षण किए जाए तो किसानों की आत्महत्याओं की संख्या कई गुना अधिक होगी।

फसलों में कौन से पोषक तत्व जरूरी, कमी पर कैसे दिखते है लक्षण

हलधर किसान 88174 02860 जिस तरह से एक व्यक्ति के शरीर को पोषक तत्वों की जरूरत होती है, उसी तरह से पौधों को भी अपनी ग्रोथ के लिए कई पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इन पोषक तत्वों के चलते ही पौधे अपना विकास, प्रजनन और विभिन्न जीवाणु क्रियाओं को कर पाते हैं। अगर ये पोषक तत्व पौधों को समय से न मिलें तो इससे उनका विकास रुक जाता है। इन पोषक तत्वों में मुख्य तौर पर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन और पोटाश आदि शामिल हैं।

इन पोषक तत्वों की कमी का प्रभाव फसल की पैदावार पर पड़ता है। अगर पौधों में इनकी कमी हो जाए, तो किसानों को भरपूर उत्पादन नहीं मिल पाता। ऐसे में आज हम आपको फसलों के लिए जरूरी कुछ ऐसे ही पोषक तत्वों के बारे में बताएंगे, जो पौधों के लिए बेहद जरूरी हैं।

कैसे करें पोषक तत्वों के कमी की पहचान

फसल में बोरान की कमी के चलते वर्धनशील भाग के पास की पत्तियों का रंग पीला हो जाता है। इसके अलावा कलियां सफेद या हल्के भूरे मृत ऊतक की तरह दिखाई देती है।

सल्फर/ गंधक की कमी के लक्षण

सल्फर/गंधक की कमी के चलते फसल की पत्तियां, शिराओं सहित गहरे हरे से पीले रंग में बदल जाती हैं तथा बाद में सफेद हो जाती हैं। गंधक की कमी के चलते सबसे पहले नई पत्तियां प्रभावित होती हैं। फसलों में मैगनीज की कमी होने पर पत्तियों का रंग पीला.घूसर या लाल घूसर जाता है तथा शिराएं हरी हो जाती हैं। पत्तियों के किनारे और शिराओं का मध्य भाग हरितिमाहीन हो जाता है। हरितिमाहीन पत्तियां अपने सामान्य आकार में ही रह जाती हैं। जिंक/जस्ता की कमी के चलते सामान्य तौर पर पत्तियों के शिराओं के मध्य हरितिमाहीन के लक्षण दिखाई देते हैं और पत्तियों का रंग कांसा की तरह हो जाता है।

फसल में अगर मैग्नीशियम की कमी हो जाए, तो पत्तियों के अग्रभाग का रंग गहरा हरा होकर शिराओं का मध्य भाग सुनहरा पीला हो जाता है। अन्त में किनारे से अन्दर की ओर लाल. बैंगनी रंग के धब्बे बन जाते हैं। पौधों की पत्तियां फास्फोरस की कमी के कारण छोटी रह जाती हैं, तथा पौधो का रंग गुलाबी होकर गहरा हरा हो जाता है। कैल्शियम की कमी के चलते पहले प्राथमिक पत्तियां प्रभावित होती हैं तथा देर से निकलती हैं। वहीं, शीर्ष कलियां खराब हो जाती हैं। कैल्शियम की कमी के चलते मक्के की नोकें चिपक जाती हैं। आयरन/लोहा की कमी होने पर नई पत्तियों में तने के ऊपरी भाग पर सबसे पहले हरितिमाहीन के लक्षण दिखाई देते हैं। शिराओं को छोड़कर पत्तियों का रंग एक साथ पीला हो जाता है। उक्त कमी होने पर भूरे रंग का धब्बा या मृत ऊतक के लक्षण प्रकट होते हैं। फसलों में कॉपर/तांबा की कमी के चलते नई पत्तियां एक साथ गहरी पीले रंग की हो जाती हैं तथा सूख कर गिरने लगती हैं। खाद्यान्न वाली फसलों में गुच्छों में वृद्धि होती है तथा शीर्ष में दाने नहीं होते हैं। अगर फसल में मालिब्डेनम की कमी हो जाए तो नई पत्तियां सूख कर हल्के हरे रंग की जो जाती हैं। मध्य शिराओ को छोड़कर पूरी पत्तियों पर सूखे धब्बे दिखाई देते हैं। नाइट्रोजन के उचित ढंग से उपयोग न होने के कारण पुरानी पत्तियां हरितिमाहीन होने लगती हैं।

पोटेशियम की कमी के चलते पुरानी पत्तियों का रंग पीला/ भूरा हो जाता है और बाहरी किनारे कट फट जाते है। मोटे अनाज यथ मक्का एवं ज्वार में ये लक्षण पत्तियों के अग्रभाग से प्रारंभ होते हैं। नाइट्रोजन की कमी के चलते पौधे हल्के हरे रंग के या हल्के पीले रंग के होकर बौने रह जाते हैं। पुरानी पत्तियां पहले पीली हो जाती हैं। मोटे अनाज दाली फसलों मैं पत्तियों का पीलापन अग्रभाग से शुरु होकर मध्य शिराओं तक फैल जाता है।

मिट्टी की करवाएं जांच

अगर आपकी फसलों में भी पोषक तत्वों की कमी हैं, तो एक बार अपने खेत की मिट्टी की जांच जरूर करवाएं। क्योंकि मिट्टी के जरिए की आपकी फसलों में पोषक तत्व पहुंचते हैं। कृषि का मूलाधार ही मिट्टी की गुणवत्ता है। बिना जानकारी के अंधाधुंध खाद आदि का प्रयोग करने से मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है। किसान बेहतर प्रबंधन कर बेहतर फसल प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में अगर आप भी अच्छी उपज पाना चाहते हैं और अपनी पैदावार को बढ़ाने के विकल्प तलाश रहे हैं तो एक बार मिट्टी की जांच जरूर करवाएं। इसके लिए आप अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र जा सकते हैं।

रबी फसलों में फंगस जनित रोगो की कैसे करें पहचान, रोकथाम?

हलधर किसान 88174 02860। रबी फसलों की बुवाई का समय चल रहा है। कई फसलों के रोग बीज जनित होते हैं। ये रोगजनक बीज बोने के बाद अनुकूल परिस्थितियों में अपनी रोगजनक उग्रता बढ़ा देते हैं ओर फसलों में बीमारी उत्पन्न कर देते हैं। इससे बोई गई फसल को काफी नुकसान होता है।

बीमारी फैलाने वाले फंगस अक्सर रोगजनक समुदाय में रहते हैं, जो अनुकूल वातावरण मिलने के बाद रबी फसलों को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। रबी फसलों में गेहूं और जौ में झुलसा व कंडुआ रोग और चना में उकठा, बीज सड़न, तना सड़न व जड़ सड़न रोग जबकि मटर में झुलसा, पत्ती झुलसा, पत्ती धब्बा रोग प्रमुख हैं। आलू का अगेती और पछेती झुलसा, टमाटर का झुलसा, पौधा गलन रोग, मिर्च में झुलसा, पौधा गलन रोग, लहसुन और प्याज में झुलसा रोग, पौधा गलन रोग पत्तागोभी में पत्ती धब्बा रोग, बैंगन में अंकुर झुलसा रोग और गन्ने में लाल रोग, ये सब फंगस से फैलने वाले रोग हैं। इससे फसलों को भारी नुकसान होता है।

फंगस जनित रोगों से से रबी फ्सलों को बचाने के लिए किसान कुछ उपायों को अपना सकते हैं। जैसे कि, स्वस्थ बीज का प्रयोग करें। बीज बोने से पहले उसे नमक के घोल में डुबो कर रखें। इससे हल्के और रोग ग्रसित बीज ऊपर आ जाते हैं। उन्हे छलनी से छान लिया जाता है। जो मोटे और स्वस्थ बीज होते हैं वो नीचे बैठे रह जाते हैं जिन्हे बुवाई के उपयोग में लाया जाता है।

रबी फसलों को फंगस जनित रोगों से बचाने के लिए बीज का जैविक और रासायनिक उपचार करें। जैविक उपचार के लिए 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर को प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। रासायनिक उपचार के लिए कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत, थाइरोम 37.5प्रतिशत 2 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज दर या कार्बोक्सिन 17.5प्रतिशत थाइरोम 17.5 प्रतिशत 2 मिली.10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर बीजों का उपचार करें। फंगस जनित रोगों से रबी फसलों को बचाने के लिए मृदा उपचार करें। इसके लिए 2 किलो ट्राइकोर्मा पाउडर को 200 किलो सड़ी गोबर में मिलाकर जूट की बोरी से 10 से 12 दिनों तक ढंक दें। उस पर थोड़ा नमी बनाए रखें। इससे ट्राइकोर्मा जीवाणु की संख्या बढ़ जाती है। फ़िर जिस खेत में रबी फसलों की बुवाई करनी है, उस खेत में छिड़काव कर मिट्टी में मिला दें। इन उपायों से रबी फसलों को फंगस संबंधी रोगों से बचाया जा सकता है और फसलों की उपज में वृद्धि की जा सकती है।

फंगस रोग से रबी फसलों को बचाने के लिए मृदा उपचार भी करना जरूरी होता है। इसके लिए 2 किलो ट्राइकोर्मा पाउडर को 200 किलो सड़ी गोबर में मिलाकर जूट की बोरी से 10 से 12 दिनों तक ढंक दें। उस पर थोड़ा नमी बनाए रखें। इससे ट्राइकोर्मा जीवाणु की संख्या बढ़ जाती है। फिर जिस खेत में रबी फसलों की बुवाई करनी ह, उस खेत में छिड़काव कर मिट्टी में मिला दें। इससे जमीन में छिपे फसलों में रोग फैलाने वाले फगस रोगों के रोगजनक खत्म हो जाते हैं।

बीजों का उपचार करते समय कुछ प्रमुख सावधानियों को बरतना आवश्यक है, जैसे बीज को उपचारित करते समय

धूम्रपान न करें। अगर किसी व्यक्ति को चोट या अन्य आंतरिक चोट लगी हो तो उसे बीजों को उपचारित नहीं करना चाहिए। उपचारित बीजों को किसी भी गीली जगह पर न रखें। बीज को उपचारित करते समय हाथों पर दस्ताने और चेहरे पर मास्क का प्रयोग करें। उपचारित बीज जल्द से जल्द बो दें। दवा के खाली पैलेटों और डिब्बों का उचित विधि से निपटान करें। जब बीज उपचारित हो जाएं तो अपने हाथ, पैर और मुंह को साबुन से अच्छी तरह धो लें।

यूपी में 23 नवंबर तक 4.66 लाख टन धान की खरीदी, 73 हजार 645 किसानों ने बेची उपज

हलधर किसान (यूपी)। उत्तर प्रदेश में समर्थन मूल्य पर सरकार ने अब तक 73 हजार 645 किसानों से सीधे 4.66 लाख टन धान की खरीद कर ली है। इस उपज के किसानों के खातों में 775.063 करोड़ रुपये भेजे जा चुके हैं। खाद्य आयुक्त सौरभ बाबू ने बताया कि धान के साथ सरकार कई जिलों में मोटा अनाज भी खरीद रही है। गुरुवार तक सरकारी क्रय केंद्रों के जरिए 1 लाख 41 हजार 849. 52 टन मोटा अनाज खरीदा जा चुका है। सरकार ने किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य दिलाने के उद्देश्य से खरीफ वर्ष 2023.24 में धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य कॉमन धान 2183 रुपये प्रति क्विंटल और धान ग्रेड.ए 2203 रुपये प्रति क्विंटल की निर्धारित दर से खरीद की जा रही है।

खाद्य आयुक्त ने बताया कि खरीद केन्द्रों पर किसानों को कोई असुविधा न हो, इसका पूरा.पूरा ध्यान रखते हुए खरीद की जा रही है। अबतक पश्चिमी यूपी के मुरादाबाद, बरेली, अलीगढ, आगरा, मेरठ, सहारनपुर, झांसी मंडल व लखनऊ मंडल के तीन जिलों हरदोई, खीरी और सीतापुर में एक अक्टूबर से धान की खरीद चल रही है। वहीं रायबरेली, उन्नाव, लखनऊ के साथ अयोध्या मंडल के जिलों में भी 20 अक्टूबर से खरीद शुरू करवा दी गई थी। धान खरीद की सरकारी प्रक्रिया अगले साल 29 फरवरी 2024 तक चलेगी।

आपको बता दें कि वित्तीय वर्ष 2023.24 के लिए योगी सरकार किसानों से दो श्रेणियों की धान खरीदेगी। इसमें धान कॉमन को 2183 रुपये प्रति क्विंटल की दर से और ग्रेड ए को 2203 रुपये प्रति क्विंटल की दर से खरीदा जाएगा। खाद्य एवं रसद विभाग किसानों से क्रय केंद्रों के माध्यम से धान और गेहूं सहित अन्य उपज की सरकारी खरीद करता है। इसके लिए विभाग और अन्य एजेंसियों के लगभग 4000 क्रय केंद्र स्थापित किए गए हैं। किसानों से खरीदी गई धान को यूपी में स्थित 814 धान मिलों को दिया जाएगा। सरकार इन मिलों से चावल लेकर सार्वजनिक वितरण प्रणाली यानी पीडीएस के माध्यम से गरीबी की रेखा से नीचे गुजर बसर कर रहे लोगों को वितरित करेगी। विभाग के अनुसार किसानों ये धान की खरीद 3752 क्रय केंद्रों पर हर दिन सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की जा रही है।

किसान सम्मान निधि को मिले सम्मान

किसान सम्मान निधि सरकार की महती योजनाओं में से एक है। इसके अंतर्गत छोटे और सीमांत किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। दो हेक्टेयर या 4.9 एकड़ से कम भूमि वाले पात्र किसानों को दो.दो हजार रुपये की तीन समान किस्तों में प्रति वर्ष छह हजार रुपये दिए जा रहे हैं। यह राशि सीधे किसानों के बैंक खाते में जमा कराने की व्यवस्था ने पारदर्शिता बढ़ाई है और बिचौलियों की भूमिका पूरी तरह समाप्त हो गई है।

इस योजना के तहत देश के लाखों किसानों को अभी तक लाभ मिलता रहा है। बीते वर्ष केंद्र सरकार तक शिकायत पहुंची थी कि महत्वपूर्ण योजना को जालसाजों द्वारा पलीता लगाया जा रहा है। जांच में मामला सामने आया कि आयकरदाताओं ने भी योजना में अपना नाम चालाकीपूर्ण शामिल करा लिया है। ऐसे लोग अनैतिक रूप से किस्त की राशि हजम कर रहे हैं। प्रदेश में ऐसे किसानों की संख्या हजारों में है। केंद्र सरकार के निर्देश पर इन किसानों को नोटिस जारी कर कृषि विभाग ने राशि लौटाने को कहा है। हालांकि अब तक राशि नहीं लौटाई गई है और उम्मीद की जा सकती है कि प्रशासनिक सख्ती के बाद गड़बड़ी करने वाले अपने बेहतर भविष्य के लिए खुद ही पैसे लौटाने के लिए आगे आएंगे।

इधर पूरे मामले से सबक लेते हुए केंद्र सरकार ने हितग्राही

संपादकीय

किसानों को ई.केवाइसी कराने की अनिवार्य शर्त रख दी है। जाहिर है, केंद्र सरकार की सूची में वास्तविक हितग्राही के रूप में इनका नाम दर्ज हो गया है।

केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि ऐसे किसान, जिन्होंने तकनीकी या व्यवहारिक दिक्कतों के चलते ई.केवाइसी नहीं कराई है, उनकी मदद की जाए। इसके लिए जिला प्रशासन व कृषि विभाग के अधिकारी जरूरतमंद किसानों तक पहुंचेंगे और ई.केवाइसी कराने में मदद भी करेंगे। सरकार की मंशा स्पष्ट है कि योजना का लाभ वास्तविक हितग्राही किसानों तक हर हाल में पहुंचे। यह उनका अधिकार भी है। निचले स्तर तक योजना का लाभ जब तक हितग्राहियों को नहीं मिलेगा, यह फलीभूत नहीं हो सकती है।

सरकार की भी मंशा साफ है। ऐसे दूरस्थ क्षेत्र, जहां इंटरनेट की सुविधा अब तक नहीं पहुंची है या फिर ऐसे हितग्राही किसान जिन्हें ई.केवाइसी की समझ नहीं है, जरूरी है कि उन तक जिला प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारी पहुंचें और योजना का लाभ दिलाने की कोशिश करें। उम्मीद की जानी चाहिए कि अधिकारी ईमानदारी से प्रयास करेंगे और जरूरतमंद किसानों को योजना का फायदा दिलाएंगे।

एजेंसी देना है-

प्रतिष्ठित मासिक समाचार पत्र हलधर किसान कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध, अनुसंधान, नई तकनिक, योजनाओं के राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के समावेश के साथ नियमित रुप से प्रकाशित हो रहा है। अखबार की प्रतियां नियमित रुप से प्राप्त करने के लिए वार्षिक सदस्यता लेने, एजेंसी/ विज्ञापन प्रकाशन के लिए हमारे वाट्सअप नंबर(88174 02860) या हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है।

नोट: कृषि, उद्यानिकी, मछली पालन, ऊर्जा, पर्यावरण जैसे विषयों पर लिखे लेख प्रकाशन के लिए भी वाट्सअप नंबर पर भेज सकते है। आपके द्वारा भेजे गए लेख, शोधकार्य या कृषि के क्षेत्र में नई तकनिकी, सफलता हासिल करने संबंधित समाचार को भी प्रमुखता से प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

सर्दियों में हर साल भारत आते हैं 8 प्रजाति के ये प्रवासी मेहमान...

हलधर किसान 88174 02860 (वन)। सर्दियों की शुरुआत होते ही भारत दूर देशों से आने वाले प्रवासी मेहमानों से भरने लगता है। आसमान से लेकर तालाब और झील तक हर जगह मेहमान पक्षियों की चहचहाहट से गूंजने लगता है। ग्रेटर फ्लेमिंगो से लेकर ब्लू टेल्ड बी.इटर तक, कई प्रजातियों के प्रवासी पक्षियों का स्वागत देश भर के विभिन्न राज्यों में दिल खोलकर किया जाता है। इन प्रवासी पक्षियों के आने से तालाब और झीलों की सुन्दरता बढ़ जाती है लेकिन कुछ समय के प्रवास के बाद ये पक्षी फिर से अपने.अपने देशों के लिए लंबी उड़ान भरते हैं। क्या आप जानते हैं कि भारत में मुख्य रूप से कौन सी प्रजातियों के पक्षी आते हैं और अगर इन्हें देखना हो तो आपको कहां जाना होगा ! किया जा सकता है।

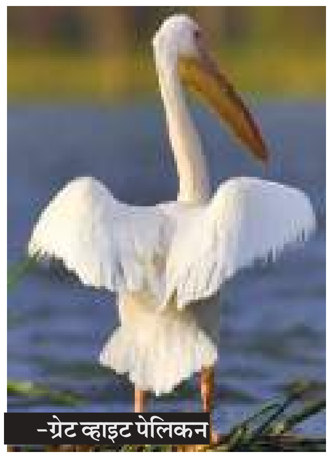
-ग्रेट व्हाइट पेलिकन

-ग्रेट व्हाइट पेलिकन

सर्दियों के मौसम में मुख्य रूप से दक्षिण.पूर्वी यूरोप से मध्य एशिया के बीच के देशों से भारत में आते हैं। ये पक्षी ऐसी झीलों के किनारों पर अपना बसेरा बनाते है, जहां अधिक शोर.शराबा नहीं होता है। चौड़े पंख, छोटे पैर और गले में लंबे पीले रंगों के पाउच वाले ये पक्षी आमतौर पर असम और उत्तर प्रदेश के झीलों में दिखाई देते हैं।

द रफ-

सर्दियों में जब प्रवास पर द रफभारत आते हैं, तो उन झीलों का रंग ही बदल जाता है। भूरे रंग के इन पक्षियों से भरे झील भी दूर से भूरे रंग के ही नजर आते हैं। ये पक्षी आमतौर पर उत्तर प्रदेश के बरखेड़ा और त्रिपुरा के सुखसागर झील में पाए जाते हैं। द रफ उत्तर.पश्चिम और उत्तर यूरोप, साइबेरिया, चुकोत्स्की प्रायद्वीप और ओखोटस्क सागर से लंबी उड़ान पर भारत आते हैं।

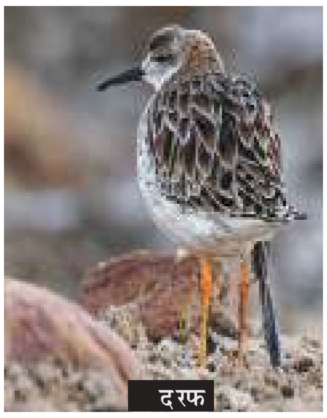
द रफ

ब्लुथ्रोट

ब्लुथ्रोट-

सुदूर अलास्का से लंबी उड़ान भरकर भारत आने वाले ब्लुथ्रोट पक्षी को दूर से देखकर ही लोग पहचान सकते हैं। गले के पास चमकिला नीला रंग इस छोटी सी पक्षी को काफी खास बनाता है। राजस्थान के भरतपुर में द केवलादेव नेशनल पार्क में ये पक्षी काफी ज्यादा दिखाई देते हैं। सर्दियों के मौसम में राजस्थान जाने वाले पर्यटक बेसब्री से इन प्रवासी पक्षियों के आने का इंतजार करते हैं।

ग्रेटर फ्लेमिंगो -

गुलाबी रंग की सुराहीदार गर्दन वाले ग्रेटर फ्लेमिंगो भारत आने वाले प्रवासी पक्षियों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय प्रजाति के पक्षी हैं। आमतौर पर अफ्रिकाए दक्षिण.पश्चिम यूरोप और दक्षिण एशियाई देशों से ये पक्षी सर्दियों के सीजन में भारत आते हैं। अपने प्रवास के दौरान गुजरात के नल सरोवर पक्षी अभयारण्य में इन पक्षियों का बसेरा होता है। इसके साथ ही गुजरात के खिजाड़िया पक्षी अभयारण्य और थोल पक्षी अभयारण्य में भी इन गुलाबी सुन्दरियों का दीदार

ग्रेटर फ्लेमिंगो

द गैडवाल

द गैडवाल-

हंकूंसस मध्य प्रदेश के भोपाल और ओडिशा के चिल्का झील को यूरोप और उत्तरी अमेरिका से आने वाले द गैडवाल पक्षी प्रवास के दौरान अपना घर बनाते हैं। ज्यादातर समय पानी में ही बिताने वाले ये काले.भूरे चित्तिदार पक्षी काफी हद तक बत्तख जैसे दिखते हैं। सर्दियों में चिल्का लेक जाने वाले पर्यटकों के लिए डॉल्फिन के साथ.साथ द गैडवाल पक्षियों को करीब से देखना भी मुख्य आकर्षण होता है।

स्पॉटेड रेडशैंक-

स्पॉटेड रेडशैंक-

सर्दियों के पूरे मौसम में स्पॉटेड रेडशैंड पक्षी हरियाणा के जलाशयों में अपना डेरा डाले रहते हैं। ये पक्षी आर्कटिक ज़ोन, उत्तरी यूरोप और उत्तरी एशियाई देशों से भारत की लंबी उड़ान पर आते हैं। नीचे की तरफ सफेद और पीठ पर हल्के स्लेटी रंग के ये पक्षी पानी में नहीं बल्कि जलाशयों के किनारों पर रहना ज्यादा पसंद करते हैं। प्रवास के सीजन में जलाशयों के किनारों पर इन पक्षियों को बड़े ही आराम और बेफिक्री के साथ घूमते हुए देखा जा सकता है।

रोजी पेलिकन -

रोजी पेलिकन

सफेद रंग पर हल्की गुलाबी आभा लिये ये पक्षी मूल रूप से यूरोपिय देशों के निवासी हैं। भारत में अपने प्रवास के दौरान इन्हें राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में देखा जा सकता है। पानी में अटखेलिया करते रोजी पेलिकन काफी ज्यादा ग्रेसफुल नजर आते हैं। ये पक्षी समूह में रहना ज्यादा पसंद करते हैं।

ब्लू.टेल्ड बी-इटर-

ब्लू.टेल्ड बी- इटर

जैसा नाम से ही स्पष्ट है कि इन पक्षियों को यह पहचान इनकी लंबी नीले रंग की पूछ की वजह से मिली हुई है। यह नीला रंग इन नन्हें पक्षियों को हजारों की भीड़ में भी खास पहचान दिलाता है। जरा सोचिए, दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशियाई देशों से चलकर आसमान में जब सैंकड़ों की संख्या में एक साथ उड़ते हुए ब्लू.टेल्ड बी.इटर दक्षिण भारतीय राज्यों में आते होंगे तो वह नजारा कितना सुन्दर दिखाई देता होगा।

द गैडवाल

असम में कीटों के हमले से 28 हजार हेक्टेयर धान की फसल को पहुंचा नुकसान

बढ़ता तापमान फसलों के लिए बढ़ रहा चिंता का कारण

हलधर किसान 88174 02860

असम में इन दिनों धान फसल पर कीटों के प्रकोप किसानों सहित सरकार के लिए चिंता का विषय बन गया है। यहां 15 जिलों में करीब 28 हजार हेक्टेयर धान की फसल को नुकसान पहुंचा है। यह फसलें पकने के करीब और कटाई के लिए तैयार थी, तभी कीटों ने इन पर हमला कर दिया। इस हमले को लंबे समय तक गर्म तापमान रहने के कारण माना जा रहा है।

इस कीट को ईयर हेड कटिंग कैटरपिलर या धान की बाली काटने वाली इल्ली या आर्मीवर्म के नाम से भी जाना जाता है। यह कीट पत्तियों को खाता है और फसलों में पौधों के आधार से बालियों को काट कर अलग कर देता है। इसकी वजह से अक्सर खेत ऐसा दिखता है मानों उसे मवेशियों ने चर लिया हो। इसके प्रकोप के दौरान, कीट बड़ी तादाद में बढ़ जाते हैं और फसलों को खाने और हमला करने के लिए एक सेना की तरह एक खेत से दूसरे खेत में झुंड बनाकर घूमते हैं।

विशेषज्ञों ने बताया कि राज्य में इस कीट की मौजूदगी की रिपोर्ट कई वर्षों से मिल रही थी, लेकिन यह पहला मौका है जब इतने बड़े पैमाने पर इन कीटों का हमला हुआ है। उनका कहना है कि यह आंशिक रूप से लंबे समय तक लगातार गर्म तापमान के रहने की वजह से हुआ है। इस बारे में असम कृषि विश्वविद्यालय के पौध संरक्षण विभाग के मृदुल डेका का कहना है कि, बढ़ते तापमान के साथ शुष्क परिस्थितियां कीटों की आबादी में वृद्धि के लिए अनुकूल माहौल तैयार कर रही हैं।

क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, 22 नवंबर 2023 तक राज्य के कम से कम सात जिलों में अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक दर्ज किया गया। वहीं गुवाहाटी में, अधिकतम तापमान 31.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो वर्ष के इस समय के लिए सामान्य से साढ़े चार डिग्री सेल्सियस अधिक है। गौरतलब है कि गर्म होती दुनिया में, तापमान और बारिश में आता बदलाव दो ऐसे कारक हैं जो कीटों और बीमारियों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह इन पर निर्भर है कि यह बीमारियां और कीट कैसे और कहां फैलते हैं। क्लाइमेट चेंज एंड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर नामक पुस्तक में प्रकाशित 2017 के एक में कहा गया है कि वैश्विक तापमान में मामूली सी भी वृद्धि कीड़ों के जीवनचक्र को छोटा कर सकती है। इसकी वजह से न केवल कीटों की आबादी में बल्कि साथ ही इनकी पीढ़ियों में भी वृद्धि होगी।

इसके साथ ही इनकी भौगोलिक सीमा, पनपने का मौसम बढ़ जाएगाए जिससे कीटों के आक्रमण का खतरा भी बढ़ जाएगा। साथ ही प्रवासी कीटों के आक्रमण की आशंका भी बढ़ जाएगी। भारत में, जहां दुनिया की 6.83 फीसदी कीट प्रजातियां रहती हैं, वहां तापमान बढ़ने से वातावरण कीटों के लिए कहीं ज्यादा अनुकूल हो जाएगा। अनुमान है कि तापमान में हर एक डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ उनका प्रसार 200 किलोमीटर उत्तर और 40 मीटर की ऊंचाई तक बढ़ सकता है।

2016 में भी बाली काटने वाली इस इल्ली के द्वारा फसलों को हुए नुकसान की खबरें सामने आई थी, हालांकि वो केवल विशिष्ट क्षेत्रों तक ही सीमित थी। वहीं इसके विपरीत इस साल राज्य के करीब आधे हिस्से में किसानों को अपनी फसलों के पूरी तरह बर्बाद होने का दंश झेलना पड़ा है। डेका ने बताया किए सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस बार कीटों का हमला उस समय हुआ है जब फैसले करीब.करीब तैयार थी, जिससे किसानों को उबरने का मौका ही नहीं मिला 19 नवंबर को, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा है कि सरकार लगातार संक्रमण पर नजर रखे हुए है। उन्होंने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि प्रभावित किसानों को राष्ट्रीय फसल बीमा पॉलिसी और प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के तहत लाभ मिले। इस कीट का पहली बार हमला 1937 के दौरान तमिलनाडु में सामने आया था। इसके बाद 1957 में केरल और ओडिशा में छिटपुट रूप से इसे रिपोर्ट किया गया था।

अरहर/तुअर दाल ने तोड़े महंगाई के सारे रिकॉर्ड, 45 प्रतिशत तक बढ़े दाम

.दामों पर नियंत्रण के लिए सरकार करेगी 10 लाख टन अतिरिक्त खरीदी

हलधर किसान नई दिल्ली.

88174 02860 । अरहर यानी तुअर की दाल ने महंगाई के रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। चालू वर्ष में जनवरी से नवंबर तक में तुअर 45 प्रतिशत महंगी हो गई है। खुदरा बाजार में तुअर दाल की कीमत 170 रुपए प्रति किलो है। उधर, चना दाल में भी बीते ग्यारह महीनों में करीब 600 से 700 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी आई है। हालांकि, मसूर, मूंग और उड़द दाल में ज्यादा तेजी नहीं है। चना दाल की मांग त्योहारों के अलावा वैवाहिक सीजन पर ज्यादा बढ़ जाती है तुअर दाल पिछले साल 110.112 रुपए प्रति किलो के दायरे में थी। इस साल 160 रुपए प्रति किलो के रेट पर जा पहुंची है। जबकि दो साल पहले तुअर दाल के रिकॉर्ड भाव 200 रुपए किलो तक पहुंचे। तब सरकार ने आयात बढ़ाकर भावों पर नियंत्रण किया।

तेजी से बढ़ते दामों पर पर नियंत्रण के लिए सरकार ने 10 लाख टन तक सरकारी खरीदी करने का निर्णय लिया है। यह खरीदी सरकारी को- ऑपरेटिव नैफेड और एनसीसीएफ के जरिये की जाएगी। इससे पहले अरहर के आयात पर शुल्क घटाने, स्टॉक लिमिट लगाने सहित कई फैसले किए जा चुके है, लेकिन किमतों पर ज्यादा असर नही पड़ा। सहकारिता मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर एक पोस्ट जारी कर कहा है कि सरकार का लक्ष्य तुअर दाल की खरीद को बढ़ावा देकर दाल की कीमतों को स्थिर करना है। यह पहल किसानों को उनकी उपज के लिए सुनिश्चित बाजार और लाभकारी मूल्य पाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। केंद्रिय कृषि मंत्रालय के अनुसार 2022-23 में अरहर उत्पादन 33.12 लाख टन रहा, जबकि 2023-24 के पहले अग्रिम अनुमा में अरहर का उत्पादन 34.21 लाख टन अनुमानित है।

घट सकते हैं भाव

व्यापार विश्लेषकों के अनुसार तुअर का भाव न्यूनतम समर्थन मूल्य से ऊंचा है। इसके चलते सरकार को प्रचलित बाजार मूल्य पर तुअर खरीदना पड़ेगा। अगर सरकार अपनी योजना के अनुरूप 8.10 लाख टन तुअर खरीदने में सफल हो गई तो हाजिर बाजार में आगामी महीनों के दौरान इसका भारी अभाव उत्पन्न हो सकता है। सरकार को भरोसा है कि अगले महीने से तुअर की नई घरेलू फसल की आवक शुरू होने पर कीमतों में कुछ मंदी आ सकती है।

लद्दाख में बनेगा दक्षिण पूर्व एशिया का पहला नाइट स्काई अभयारण्य

खगोल पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

हलधर किसान (नई दिल्ली)

88174 02860 । देश का पहला नाइट स्काई सैक्चुअरी लद्दाख में स्थापित किया जाएगा। यह जानकारी केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख की स्थापना की चौथी वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी लद्दाख प्राइड के उद्घाटन अवसर पर दी। इस प्रदर्शनी का आयोजन मुख्य कार्यकारी पार्षद सीईसी ताशी ग्यालसन की पहल पर लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद (एलएएचडीसी) लेह द्वारा किया जाता है। मंत्री सिंह ने कहा कि हनले नाइट स्काई सैंक्चुअरी परियोजना के लिए लद्दाख सबसे उपयुक्त है, क्योंकि यह ठंडा रेगिस्तानी क्षेत्र है। अगले तीन महीने के भीतर यहां यहां खास अभ्यारण्य स्थापित किया जाएगा।

खगोल.पर्यटन को बढ़ावा देगा और ऑप्टिकल, इन्फ्रा.रेड और गामा.रे दूरबीनों के लिए दुनिया के सबसे शीर्षस्थ स्थानों में से एक होगा। लद्दाख के चांगथांग वन्यजीव अभयारण्य के एक हिस्से को भारत के पहले नाइट स्काई अभयारण्य रूप में स्थापित किया जाएगा। लद्दाख के हनले में प्रस्तावित डार्क स्काई रिजर्व प्रोजेक्ट अगले तीन महीने में पूरा करने का लक्ष्य है। ये भारत में खगोलीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया जाएगा। लद्दाख में यूटी प्रशासन के बीच हुए समझौता के बाद इस प्रोजेक्ट पर तेजी कार्य होगा।

1.073 वर्ग किलोमीटर में फैला, नाइट स्काई रिजर्व चांगथांग वन्यजीव अभयारण्य में स्थित है और भारतीय खगोलीय वेधशाला के निकटए भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान का दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा ऑप्टिकल टेलीस्कोप, 4500 मीटर की ऊंचाई पर हानले में स्थित है।

ऐसे समय में जब देश चंद्रयान.3 और आदित्य.एल1 सौर मिशन की सफलता का उत्सव मना रहा है, यह डार्क स्काई रिज़र्व दुनिया में अपनी तरह के केवल 15 या 16 में से एक होने के कारण, खगोलज्ञों को आकर्षित करेगा।

इस स्थान पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप के माध्यम से स्थानीय पर्यटन और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद करने वाली गतिविधियां होंगी। 15.000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर तीन औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इसमें संजीवनी बूटी शामिल है, जिसे स्थानीय रूप से सोला के नाम से जाना जाता है, जिसमें प्रचुर जीवन रक्षक और चिकित्सीय गुण हैं।

क्या है डार्क स्काई सैक्चुअरी ?

एक डार्क स्काई सैंक्चुअरी सार्वजनिक या निजी भूमि है, जिसमें तारों वाली रातों की एक खास गुणवत्ता होती है। इसमें एक रात का पूरा एटमॉस्फेयर होता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जो आमतौर पर एक पार्क के आसपास होता है और प्रकाश प्रदूषण को प्रतिबंधित करता है। बौद्ध लामाओं की भूमि लद्दाख एक शांतिप्रिय क्षेत्र है, लेकिन राजनीतिक और अन्य उथल.पुथल के इतिहास से जूझ रहा है। 31 अक्टूबर 2019 को केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख का गठन किया गया।

विदेश से लौटी सीमा गुलाटी ने मॉडर्न खेती में मिसाल कि कायम, तीन लाख रुपए कीमत वाले मशरूम की खेती कर जीते कई अवार्ड

हलधर किसान 88174 02860

(सफलता की कहानी)। आस्ट्रेलिया से नौकरी छोड़कर स्वदेश लौटी करनाल (हरियाणा) की सीमा गुलाटी मॉडर्न खेती में मिसाल बन चुकी हैं। उन्होंने ग्लोबल मार्केट में 3 लाख रुपए किलो बिकने वाली मशरूम यानि कीड़ा जड़ी का उत्पादन कर पहली मशरूम खेती करने वाली महिला कृषक बन गई है।

करनाल की सीमा गुलाटी। गुलाटी तीन लाख रुपए किलो बिकने वाली कोर्डिसेफआगाने के बाद से चर्चाओं में है। इसके लिए उन्होंने चीन व थाईलैंड में प्रशिक्षण लिया। नोर्थ इंडिया में यह पहली मशरूम उत्पादक हैं। 2014 में उन्होंने मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने मशरूम की हार्वेस्ट व कोल्ड चैन विकसित की। कार्डिसेफ कैंसर, व फटीलिटी इंप्रवमेंट के लिए रामबाण है।

आधुनिक खेती में मिसाल बन चुकी ये महिला किसान अब नए शोध के साथ नए प्रोडेक्ट भी मार्केट में उतारने लगी है। खेती को घाटे का सौदा बताने वालों को सीख देने वाली महिला बन गई है। वे कृषि डिपार्टमेंट की ब्रांड एंबेसडर भी हैं।

ग्लोबल मार्केट में कीमत है 3 लाख रुपए

हरियाणा के करनाल निवासी सीमा गुलाटी साल 2008 से पहले ऑस्ट्रेलिया में लेक्चरर की नौकरी करती थीं। उनके मन में कुछ नया करने का सपना था और इसी सपने को लेकर वो लौट आई अपने वतन. हालांकि, उनके बच्चे अभी भी ऑस्ट्रेलिया में रह रहे हैं। करनाल के कुटेल गांव में सीमा खेती को नया आयाम दे रही हैं। उनका कहना है कि अपने ही देश में कुछ अलग करने की ठानकर वापस आई हैं थी। गांव में अपनी जमीन पर मशरूम उत्पादन शुरू किया। सीमा छोटे से फार्म हाउस में कीड़ा जड़ी मशरूम यानी कार्डिसेप्स मिलिट्रीज मशरूम उगा रही हैं। वह इससे न केवल पैदावार ले रहीं हैं बल्कि किसानों को इसे उगाने का प्रशिक्षण भी दे रही हैं। वो इस काम के लिए महिलाओं को ट्रेनिंग भी देती हैं। कार्डिसेप्स मिलिट्रीज मशरूम को कीड़ा जड़ी का विकल्प भी कहा जाता है और यह बाजार में तीन लाख रुपये प्रति किलो की दर से बिक जाता है।

सीमा ने नेशनल सेंटर फॉर कोल्ड चेन डेवलपमेंट के माध्यम से विदेश में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मशरूम उत्पादन शुरू किया था और अब वह 3 लाख रुपए प्रति किलो वाली मशरूम उगा रही है। उन्होंने बताया किए वह 20 फुट लंबी और 22 फुट चौड़ी जगह में एक माह में तीन से पांच किलो कार्डिसेप्स मिलिट्रीज मशरूम का उत्पादन कर लेती हैं।

कीड़ा जड़ी मशरूम कि खासियत

सीमा बताती हैं कि मशरूम की लगभग 400 प्रजातियां हैं, जिनमें से दो प्रजातियां माइकोलॉजिस्ट और कॉर्डिसेप्स मिलिटारिस मशरूम यह दक्षिण.एशिया के हिमालयी क्षेत्र में पाई जाती हैं। यह चीनी हर्बलिज्म, तिब्बती चिकित्सा और यहां तक कि भारत के प्राचीन आयुर्वेद में सदियों से इस्तेमाल किया जाता रहा है। आज यह सबसे बेशकीमती मशरूम में से एक है, जिसकी कीमत भारत में लगभग 3 लाख रुपए प्रति किलो से ऊपर तक भी चली जाती है। सीमा ने कॉर्डिसेप्स मशरूम का उत्पादन कर अपनी आमदनी को भी बढ़ाया है। सोनीपत के जिले के कस्बे गनौर में एग्रीकल्चर के एक प्रोग्राम में सीमा ने कॉर्डिसेप्स मशरूम की चाय बनाकर राष्ट्रपति राम नाथ गोविन्द को भेजी थी।

कहां और मिलता है कीड़ा जड़ी मशरूम

उत्तराखंड के पिथौरागढ़ और धारचूला के 3500 मीटर की ऊंचाईयों में एक बड़े पैमाने पर कीड़ा जड़ी पाया जाता है। स्थानीय लोग इसका दोहन कर रहे हैं, क्योंकि चीन में इसकी ज्यादा कीमत मिलती है। यह एक प्रकार का जंगली मशरूम है जो एक विशेष कीड़े कैटरपिलर्स को मारकर उगता है। इसका वैज्ञानिक नाम कॉर्डिसेप्स साइनेसिस है, जो हैपिलस फैब्रिकस कीड़े पर पलता है। स्थानीय लोग इसे कीड़ा.जड़ी कहते हैं, क्योंकि यह आधा कीड़ा और आधा जड़ी होता है। मई से जुलाई के बीच जब बर्फपिघलती है तो यह उगने लगता है।

मिक्सड फार्मिंग से होता है मुनाफा

मशरूम उत्पादन के अलावा सीमा मिक्सड फार्मिंग भी करती हैं, वो ऑर्गेनिक सरसों के साथ कई तरह के अनाज का उत्पादन भी कर रही हैं। सीमा ने लगभग 8 एकड में आलू, अंग्रेजी सब्जियां, ब्रोकली, लहसुन, गोभी सहित कई रंग और कई प्रकार के सलाद पत्तों की खेती करती हैं। उन्होने आधा एकड़ में ग्रीन हाउस भी लगा रखा है। इसके साथ ही एक एकड़ में मशरूम की खेती और प्रोसेसिंग का काम कर रही हैं। उन्होंने ना केवल फल.फूल और सब्जियों के उत्पादन में बल्कि इनकी पैकेजिंग और ब्रांडिंग पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया है। उन्होने अपने ब्रांड का नाम ऐले रखा है, वो इस प्रोडक्ट को बेहतर मार्केटिंग के दम पर लोगों तक पहुंचा रही हैं।

सीमा को कई पुरस्कार भी मिले

सीमा राष्ट्रीय स्तर और राज्य स्तरीय प्रदर्शनियों में भी अपने उत्पादों की बिक्री कर चुकी हैं। इन प्रदर्शनियों से सीमा कई पुरस्कार भी जीत चुकी है। मशरूम उत्पादन के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सोलन इकाई ने उन्हें पुरस्कृत भी किया है। इसके अलावा उन्हें कई बार प्रगतिशील किसान का पुरस्कार भी मिला है। सीमा कहती हैं खेती पर बस थोड़ा ध्यान देने की जरूरत है और फिर जमीन केवल पेट भरने का साधन नहीं होगी, इससे सुरक्षा, रूतबा और सम्मान तीनों ही मिल सकता है।

खुद का प्रोडेक्ट पैकिंग और मार्केटिंग

वह कार्डिसेप्स मिलिट्रीज मशरूम से पाउडर, कैप्सूल, चाय, और एनर्जी ड्रिंक्स बनाती हैं। कॉर्डिसेप्स यानि कीड़ा जड़ी ऐसी प्रजाति है, जिसके औषधीय गुणों के कारण विदेशों और देश के नामी घरानों तक में इसकी पहुंच है और इस मशरूम का रेट भी लाखों में होता है, जोकि चाय की तरह पानी में उबालकर पीने से तंदरुस्ती आती है। इसके अलावा ऑर्गेनिक सब्जी और अन्य उत्पाद बनाने शुरू किए। लोग की डिमांड बढ़ती चली गई तो उन्होंने अपने प्रोडेक्ट की पैकिंग और मार्केटिंग शुरू कर दी।

पिछले 5 वर्षों में 22.81 प्रतिशत बढ़ा दूध उत्पादनः केंद्रिय मंत्री रुपाला

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर पशुपालन विभाग ने जारी किए दूध, मांस, अंडा, ऊन उत्पादन के वार्षिक आंकड़े

हलधर किसान हिमाचल प्रदेश। केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री परषोत्तम रूपाला ने गुवाहाटी में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर आयोजित कायक्रम में पशुपालन आंकड़े जारी किए है। यह पशु एकीकृत नमूना सर्वेक्षण (मार्च 2022.फरवरी 2023 पर आधारित बुनियादी 2023) दूध, अंडा,मांस और ऊन उत्पादन 2022.23 जारी किए। बुनियादी पशुपालन आंकड़ों की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

केंद्रीय मंत्री परषोत्तम रूपाला ने बताया कि देश में दुग्ध, अंडा, मांस और ऊन के उत्पादन का अनुमान वार्षिक एकीकृत नमूना सर्वेक्षण के परिणामों के आधार पर लगाया जाता है, जो देश भर में तीन मौसमों यानी गर्मी मार्च.जून, बरसात जुलाई.अक्टूबर और सर्दी नवंबर.फरवरी में आयोजित किया जाता है। वर्ष 2022.23 के लिए दूध, अंडा, मांस और ऊन के उत्पादन का अनुमान सामने लाया गया है और इस सर्वेक्षण के परिणामों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

वर्ष 2022.23 के दौरान देश में कुल दुग्ध उत्पादन 230.58 मिलियन टन अनुमानित है, जिसमें पिछले 5 वर्षों में 22.81 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो वर्ष 2018.19 में 187.75 मिलियन टन थी। इसके अलावा, वर्ष 2021.22 के अनुमान से वर्ष 2022.23 के दौरान उत्पादन 3.83 प्रतिशत बढ़ गया है। पूर्व मेंए वर्ष 2018.19 में वार्षिक वृद्धि दर 6.47 प्रतिशतय वर्ष 2019.20 में 5.69 प्रतिशतय वर्ष 2020.21 में 5.81 प्रतिशत और वर्ष 2021.22 में 5.77 प्रतिशत थी।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वर्ष 2022.23 के दौरान सबसे अधिक दुग्ध उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश था, जिसकी कुल दुग्ध उत्पादन में हिस्सेदारी 15.72 प्रतिशत थी। इसके बाद राजस्थान 14.44 प्रतिशत, मध्य प्रदेश 8.73 प्रतिशत, गुजरात 7.49 प्रतिशत और आंध्र प्रदेश 6.70 प्रतिशत का स्थान था। वार्षिक वृद्धि दर एजीआर के संदर्भ में, पिछले वर्ष की तुलना में सबसे अधिक वार्षिक वृद्धि दर कर्नाटक 8.76 प्रतिशत में दर्ज किया गया, इसके बाद पश्चिम बंगाल 8.65 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश 6.99 प्रतिशत का स्थान रहा।

अंडा उत्पादन- देश में कुल अंडा उत्पादन 138.38 बिलियन होने का अनुमान है। वर्ष 2018.19 के दौरान 103.80 बिलियन अंडों के उत्पादन के अनुमान की तुलना में वर्ष 2022.23 के दौरान पिछले 5 वर्षों में 33.31 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इसके अलावा, वर्ष 2021.22 की तुलना में वर्ष 2022.23 के दौरान उत्पादन में 6.77 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि हुई है। पूर्व में वर्ष 2018.19 में वार्षिक वृद्धि दर 9.02 प्रतिशतय वर्ष 2019.20 में 10.19 प्रतिशतय वर्ष 2020.21 में 6.70 प्रतिशत और वर्ष 2021.22 में 6.19 प्रतिशत थी। देश के कुल अंडा उत्पादन में प्रमुख योगदान आंध्र प्रदेश का रहा है, जिसकी हिस्सेदारी कुल अंडा उत्पादन में 20.13 प्रतिशत है, इसके बाद तमिलनाडु 15.58 प्रतिशत, तेलंगाना 12.77 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल 9.94 प्रतिशत और कर्नाटक 6.51 प्रतिशत का स्थान है। वार्षिक वृद्धि दर एजीआर के संदर्भ में, सबसे अधिक वृद्धि दर पश्चिम बंगाल में 20.10 प्रतिशत दर्ज की गई और उसके बाद सिक्किम 18.93 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश12.80 प्रतिशत का स्थान रहा।

मांस उत्पादन- वर्ष 2022.23 के दौरान देश में कुल मांस उत्पादन 9.77 मिलियन टन होने का अनुमान है, जिसमें वर्ष 2018.19 में 8.11 मिलियन टन के अनुमान की तुलना में पिछले 5 वर्षों में 20.39 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2021.22 की तुलना में वर्ष 2022.23 में 5ण13 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इससे पहले वर्ष 2018.19 में वार्षिक वृद्धि दर 5.99 प्रतिशतय वर्ष 2019.20 में 5.98 प्रतिशतय वर्ष 2020.21 में 2.30 प्रतिशत और वर्ष 2021.22 में 5.62 प्रतिशत थी। कुल मांस उत्पादन में प्रमुख योगदान 12.20 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ उत्तर प्रदेश का है और इसके बाद पश्चिम बंगाल 11.93 प्रतिशत, महाराष्ट्र 11.50 प्रतिशत आंध्र प्रदेश 11.20 प्रतिशत और तेलंगाना 11.06 प्रतिशत का स्थान है। सिक्किम में 63.08 प्रतिशत दर्ज की गई है, इसके बाद मेघालय 38.34 प्रतिशत और गोवा 22.98 प्रतिशत का स्थान है।

ऊन उत्पादन- वर्ष 2022.23 के दौरान देश में कुल ऊन उत्पादन 33.61 मिलियन किलोग्राम अनुमानित है, जिसमें वर्ष 2018.19 के दौरान 40.42 मिलियन किलोग्राम के अनुमान की तुलना में पिछले 5 वर्षों में 16.84 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। हालांकि, वर्ष 2021.22 की तुलना में 2022.23 में उत्पादन 2.12 प्रतिशत बढ़ गया है। इससे पूर्व में वर्ष 2018.19 में वार्षिक वृद्धि दर .2.51 प्रतिशत वर्ष 2019.20 में .9.05 प्रतिशत, वर्ष 2020.21 में .0.46 प्रतिशत और वर्ष 2021.22 में .10.87 प्रतिशत थी। ऊन उत्पादन में 47.98 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ राजस्थान का प्रमुख योगदान है, इसके बाद जम्मू.कश्मीर22.55 प्रतिशत, गुजरात 6.01 प्रतिशत, महाराष्ट्र 4.73 प्रतिशत और हिमाचल प्रदेश 4.27 प्रतिशत का स्थान है। सबसे अधिक वार्षिक वृद्धि दर अरुणाचल प्रदेश 35.75 प्रतिशत में दर्ज किया गया है।

अपशिष्ट जल से उगाई गई सब्जियों में भारी धातुओं की मात्रा, एनजीटी ने लिया संज्ञान, दिए जांच के आदेश

हलधर किसान 8817402860

कर्नाटक। बदलते वक्त के साथ अब फल.सब्जियों की तासीर भी आपकी सेहत को नुकसान पहुंची सकती है। यदि इनके सेवन से पहले सावधानी नहीं बरती तो आप कई गंभीर बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। दरअसल कर्नाटक राज्य के बैंगलूरु के बाजार में आई सब्जियों की टेस्टिंग में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। रिपोर्ट में कई घातक कैमिकल के साथ हैवी मैटल सब्जियों में पाए गए हैं, जो गंभीर बीमारियों का कारण होती है।

राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने बेंगलुरु में बेची जाने वाली सब्जियों में भारी मात्रा में धातु पाए जाने पर स्वतः संज्ञान लिया है। यह केस एक लेख के आधार पर शुरू किया गया था जिसमें कहा गया था कि पर्यावरण प्रबंधन और नीति अनुसंधान संस्थान (ईएमपीआरआई) ने 10 विभिन्न सब्जियों के 400 नमूनों को एकत्रित कर अध्ययन किया था, जिसमें प्रदूषण का स्तर खाद्य और कृषि संगठन (एफओ) द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक पाया गया था। समाचार लेख के अनुसार, अपशिष्ट जल से उगाई गई सब्जियों में भारी धातुओं की उपस्थिति देखी गई है। जिसमें लोहे की सांद्रता लगभग दोगुनी थी और धनिया और पालक में, कैडमियम जो एक जहरीली भारी धातु है, 0.2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम के मुकाबले 52.30 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाई गई। जबकि निकेल 67.9 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम से अधिक हो गया। कर्नाटक राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अग्रिम सूचना पर इमरजेंसी मैनेजमेंट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के अध्ययन और निष्कर्षों का जिक्र करते हुए एक संक्षिप्त रिपोर्ट दायर की। रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि सब्जियों में प्रदूषण की सीमा को समझने के लिए राज्य स्तर पर इसके स्रोतों को शामिल करते हुए अधिक व्यापक और गहन अध्ययन आवश्यक है। इस मामले पर अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव और विशेषज्ञ सदस्य डॉ. ए सेंथिल वेल की अध्यक्षता वाली समिति ने पाया कि पर्यावरण से संबंधित एक गंभीर मुद्दा उठाया गया है।

अध्ययन करने का दिया निर्देश

एनजीटी ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को तथ्यात्मक स्थिति की जांच करने और ईएमपीआरआई अध्ययन की जांच करने का निर्देश दिया। इसके अलावे इसने राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण की दक्षिणी पीठ को तथ्यात्मक स्थिति और की गई कार्रवाई रिपोर्ट दोनों प्रस्तुत करना अनिवार्य कर दिया। अदालत ने सीपीसीबी को सब्जियों के नमूने इकट्ठा करने और व्यक्तिगत भारी धातुओं और कीटनाशक मापदंडों के लिए उनका विश्लेषण करने का निर्देश दिया। पीठ ने कहा कि सीपीसीबी सब्जियों में भारी धातुओं की जांच करने वाली संस्था ईएमपीआरआई की रिपोर्ट का परीक्षण करे और ग्राउंड सिचुएशन के साथ तथ्यात्मक रिपोर्ट दक्षिणी क्षेत्र में स्थित पीठ के पास दाखिल करे। पीठ ने कहा कि इस मामले में एक्शन भी लिया जाए और उसकी रिपोर्ट भी दाखिल की जाए। इन सब्जियों को वेस्टवाटर के जरिए उगाया गया था, जिसके कारण सब्जियों में भारी धातु पहुंच गए। इस तरह की सब्जियों का आहार करने से अत्यधिक मात्रा में मौजूद भारी धातु शरीर के ऑर्गन को नुकसान पहुंचा सकते हैं और गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो सकती है। वहीं, इस मामले में कर्नाटक प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने एनजीटी में हलफनामा दाखिल कर बताया कि ईएमपीआरआई की रिपोर्ट और उनकी पड़ताल का गहन परीक्षण होना चाहिए ताकि भारी धातुओं की सब्जियों में मौजूदगी को और बेहतर तरीके से समझा जा सके। यह कार्य राज्यस्तर पर होना चाहिए। मामले की अगली सुनवाई चेन्नई में 10 जनवरी 2024 को होगी।

नवंबर माह के अंक की प्रश्नोत्तरी के विजेता को पुरस्कृत करते संस्था के मार्गदर्शक एवं संरक्षक श्री विनोद जैन

दुनिया में अलग पहचान रखती है मेघालय की लाकाडोंग हल्दी, मिला जीआई टैग

हलधर किसान (मेघालय)। अपने जादुई स्वास्थ्य लाभों के लिए प्रसिद्ध मेघालय की लाकाडोंग हल्दी को चेन्नई में भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्रार से भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग की विशेष पहचान मिल गई है। लाकाडोंग हल्दी को दुनिया की सबसे अच्छी हल्दी में से एक के रूप में जाना जाता है और यह मेघालय के जैन्तिया हिल्स के एक गांव से प्राप्त की जाती है। हल्दी की यह किस्म पहले ही यूनाइटेड किंगडम और नीदरलैंड सहित कई वैश्विक गंतव्यों में पहुंच चुकी है।जीआई टैग की खबर की जानकारी मेघालय के मुख्यमंत्री कॉनराड के संगमा ने राज्य कन्वेंशन सेंटर में किसान संसद के तीसरे संस्करण के उद्घाटन सत्र में दी। किसान संसद के तीसरे संस्करण के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए, सीएम ने कहा आज, मुझे आपको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 29 नवंबर को, जो कि पिछले सप्ताह ही था, चेन्नई में भौगोलिक संकेत रजिस्ट्रार ने आखिरकार लाकाडोंग हल्दी को जीआई टैग दे दिया गया। हमने यह प्रक्रिया चार साल पहले शुरू की थी। यह एक बार में नहीं हुआ। इसलिए मैं आपको यह बताने की कोशिश कर रहा हूं कि जैसे.जैसे हम आगे बढ़े, हमने सीखा, हमने सुधार किया और हमने छोटी.छोटी चीजें कीं, जिनसे किसानों के जीवन में बड़ा बदलाव आएगा। मेघालय में उगाई जाने वाली हल्दी की किस्म अपनी उल्लेखनीय करक्यूमिन सामग्री के कारण सबसे अलग है, जो प्रतिरक्षा को मजबूत करने के लिए असाधारण रूप से अनुकूल है। हल्दी का एक विशिष्ट प्रकार, लाकाडोंग, करक्यूमिन में असाधारण रूप से प्रचुर मात्रा में है, जिसका स्तर सात प्रतिशत से आठ प्रतिशत तक है। केवल दो से तीन प्रतिशत करक्यूमिन युक्त सामान्य किस्मों के विपरीत एक महत्वपूर्ण अंतर। इसे उर्वरकों के उपयोग के बिना जैविक रूप से उगाया जाता है। लाकाडोंग क्षेत्र के 43 गांवों के लगभग 14,000 किसान वर्तमान में 1,753 हेक्टेयर भूमि पर हल्दी की खेती में लगे हुए हैं। कृषि मंत्री लिंगदोह ने कहा कि जीआई टैग किसानों को एक बिक्री का बेहतर मौका देगा और उन्हें अच्छा बाजार मूल्य मिलेगा। गुणवत्ता में यह हल्दी अन्य राज्यों के मुकाबले बेहतर मानी जाती है।

परखें कृषि ज्ञान, आसान सवालों का जवाब देकर पाएं आकर्षण उपहार

हलधर किसान से जुड़े पाठको के लिएं हम लाए कृषि से जुड़े आसान सवाल, जिनके जवाब देकर आप अपना सामान्य ज्ञान परखने के साथ ही पा सकते है आकर्षक उपहार, तो इस अंक में कृषि कीट विज्ञान एवं खरपतवारनाशी प्रश्नोत्तरी है-

प्रश्न . कारपोमिया विशुवियना एक खतरनाक कीट है-

अ. अनार का..
ब. बेर का...
स. संतरा का..
द. अमरुद का..

आपका उत्तर .....

प्रश्नः- तोरिया की फसल में आरा मक्खी हानि पहुंचाती है?

अ. प्रारंभिक अवस्था में..
ब. फली बनते समय...
स. पकते समय..
द. उपर्युक्त में से कोई नही..

आपका उत्तर........

प्रश्नः- कुटुम्ब चेल्सीडिटी की बरे परजीवी है

अ. रेशम कीट
ब. मधुमक्खी
स. लाख कीड़ा
द. टिड्डे

आपका उत्तर .....

प्रश्नः- फलमक्खी की कौन-सी अवस्था अधिक हानि पहुंचाती?

अ. प्रौढ़
ब. लार्वा
स. प्यूपा
द. प्रौढ़+ निम्फ

आपका जवाब...........

नवंबर माह के सवालो का सही जवाब, सवाल 1-द, सवाल 2 -स, सवाल 3-स, सवाल 4 का उत्तर- ब है।

नोटः आपके जवाब हमें इस प्रश्नोत्तरी में दर्ज कर अखबार की कटिंग 25 नवंबर तक हमारें वाट्सएप्प नंबर (88174 0286०) पर,या हमारे मुख्य कार्यालयः हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है। पर डाक के जरिये भेज सकते है। सही जवाब देने वाले पाठको का लॉटरी के जरिये परिणाम निकाला जाएगा। सही जवाब देने वाले विजेता को हलधर किसान की ओर से आकर्षण उपहार उनके भेजे गए पते पर भेजे जाएंगे। अगले अंक में हम सही जवाब और विजेता का नाम घोषित करेंगे। ई- मेल (haldharkisankgn@gmail.com) पर भी भेज सकते है।

युद्ध से केवल विनाशः इंसानों ही नहीं पर्यावरण पर भी होता है भयावह असर ...

हलधर किसान
88174 02860

युद्ध किसी भी देश के लिए लाभदायक सिद्व नहीं होता हैए बल्कि उससे मानवता को हानि और क्षति होती है। इसलिए युद्ध न केवल मृत्यु और विनाश का कारण बनते हैं बल्कि स्थायी शारीरिक और मानसिक चोट भी पहुंचाते हैंए जो अंत तक उन लोगों को परेशान करती रहेगी जो उनसे प्रभावित होते हैं। पृथ्वी पर जीवन अनमोल और अद्वितीय है।

आज के इस आधुनिक युग में जहां पर हर देश के पास एक से एक बढ़कर परमाणु तथा अन्य विध्वंसक हथियार हैं। ऐसी स्थिति में किसी भी देश के बीच होने वाले युद्ध में किस तरह के खतरनाक हथियारों का उपयोग किया जाता है, यह हम सब जानते हैं।

रूस तथा यूक्रेन के बाद अब इजरायल-फीलिस्तीन बीच चल रहे युद्ध में भी ऐसे ही खतरनाक हथियारों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ना निश्चित है। इन हथियारों से उत्पन्न होने वाले विकिरण से गंभीर दुष्प्रभाव उत्पन्न होंगे।

इसी बात को लेकर चिंता हो रही है कि आने वाले समय हम दुनिया वालों को पता नहीं किस तरह के परिणाम झेलने पड़ें। इसी कारण आज के इस समय में कोई भी युद्ध के समर्थन में नहीं है। आज हर बड़ा देश परमाणु संपन्न है अथवा खतरनाक हथियारों से लैस है। युद्ध विनाश ही उत्पन्न करता है। तेजी से विश्व युद्ध के तरफ बढ़ रही दुनिया के एक- दूसरे से दुश्मनी रखने देशो को युद्ध के बजाय बातचीत से मुद्दों के हल की पहल करना होगी। वर्तमान में हर कोई ईश्वर से प्रार्थना कर रहा कि जल्दी ये युद्ध समाप्त हो और हमारी पृथ्वी विनाश से बचे। हमारा पर्यावरण विनाश से बचे।

युद्ध के नतीजे हमेशा ही हानिकारक होते हैं। हां इसमें एक पक्ष का नुकसान कम तो दूसरे पक्ष का नुकसान अधिक हो सकता है। कई बार नुकसान तो एक तरफा ही दिखाई देता है। रुस-युक्रेन युद्ध को करीब 22 माह का समय हो चला है, तो वही इजरायल हमास युद्ध को भी दो माह होने वाले है। ऐसे में दोनो युद्ध का आर्थिक असर किस तरह का होगा। यह केवल दो पक्षों का मामला नहीं है मध्यपूर्व की भूराजनीतिक स्थिति और इजरायल फिलिस्तीन संकट के इतिहास को देखते हुए इसमें पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था ही प्रभावित हो रही है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। इससे दुनिया का आर्थिक स्थिति पर असर कैसा हो रहा है इसका आंकलन अगल तो नहीं हो रहा है, लेकिन विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा ने इस ओर ध्यान जरूर दिलाने का प्रयास किया है।

गंभीर झटका देने वाला

अजय बंगा ने सऊदी अरब में मंगलवार को हुए एक निवेशक सम्मेलन में साफतौर पर कहा कि इजरायल हमास युद्ध वैश्विक आर्थिक विकास के लिए गंभीर झटका देने वाला सबित होगा। उन्होंने स्थिति को समझने के लिए बताया कि जो इजरायल और गाजा में हाल ही में हुआ है, अगर उसे एक साथ मिला कर देखा जाए तो हम पाएं कि इसके आर्थिक विकास पर बहुत ही ज्यादा गंभीर होगा। मानवता एक बहुत ही खतरनाक मोड़ पर खड़े हैं। जहां बीते 7 अक्टूबर को गाजा पट्टी से इजरायल पर हुए हमले में 1400 लोग मारे गए और बूढ़े, बच्चों और महिलाओं सहित 222 लोगों का अपहरण हुआ था, इजरायल की जवाबी कार्रवाई में अधिकांश नागरिकों सहित 5 हजार से अधिक फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं

इजरायल के हमले से पहले ये हाल

यह केवल मारे गए इंसानों के आंकड़े हैं। इसमें घरों और इमारतों सहित अन्य आर्थिक नुकसान कितना हुआ है। इसका आंकलन तो अभी शुरू भी नहीं हैं और एक बात यह भी ध्यान रखने की है कि अभी तक को इजरायल ने जमीनी हमला शुरू भी नहीं किया है जिसकी वह इस समय तैयारी कर रहा है या सही शब्दों में कहें तो जिसे शुरू करने लिए इजरायली सेना इंतजार कर रही है।

किस देश के पास कितने परमाणु हथियार

रूस. 5977,
अमेरिका.542,
चीन.350,
फ्रांस.290,
यूके.225,
पाकिस्तान.165,
भारत.160,
इजरायल.90
उत्तर कोरिया.20

पल भर में लाखों.करोड़ों मौतें, हिल जाता है प्रकृति का पूरा सिस्टम

सोचिये क्या मंजर होगा अगर दुनिया में परमाणु युद्ध छिड़ जाए। आज से 77 साल पहले जब परमाणु बम जापान के दो शहरों पर गिरे थे, तो मौत का तांडव पूरी दुनिया ने देखा था। हजारों.लाखों लोग तड़प.तड़पकर अपनों के सामने दुनिया छोड़कर चले गए थे और जो बचे उन्हें ऐसी बीमारियों ने घेरा कि मौत जिंदगी से ज्यादा प्यारी लगने लगे।

रूस और यूक्रेन, इजरायल और फिलीस्तीन के बीच जारी जंग के बीच दुनिया पर परमाणु युद्ध का खतरा मंडरा रहा है। लड़ाई लगभग अपने अंतिम दौर में है लेकिन खतरों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने परमाणु दस्तों को अलर्ट रहने के आदेश ने लोगों की धड़कनें और बढ़ा दी हैं, ऐसे में यह सवाल उठ रहा है कि अगर परमाणु हमला हुआ तो दुनिया के साथ.साथ पर्यावरण पर क्या असर पड़ेगा?

एक्सपर्ट्स कहते हैं कि अगर लिमिटेड न्यूक्लियर वॉर भी हुआ, तो भी करोड़ों लोग मौत की नींद सो जाएंगे। परमाणु हमले के बाद जो हालात पैदा होंगे जैसे पर्यावरण में बदलाव और बीमारियां, उनसे करोड़ों लोग और मारे जाएंगे। परमाणु हमले के कारण धरती के स्ट्रोस्फेयर का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाएगा क्योंकि चारों तरफ धुआं फैल जाएगा और सूरज की रोशनी नहीं फैल पाएगी। गर्म स्ट्रोस्फेयर के कारण धरती को रेडिएशन की किरणों से बचाने वाली ओजोन लेयर कैमिकल रिएक्शन से तबाह हो जाएगी।

मध्य अक्षांश के ऊपर अल्ट्रावॉयलेट लाइट की रेंज 30 प्रतिशत से बढ़कर 80 प्रतिशत हो जाएगी, जिससे लोगों की जिंदगी, खेती और पानी में रहने वाले जानवरों को बेतहाशा नुकसान पहुंचेगा।

परमाणु हमले का दर्द लोग ही नहीं प्रकृति भी झेलेगी। दुनिया भर में जो बारिश होती है, उसमें तेजी से गिरावट होगी और मॉनसून का पैटर्न भी बिगड़ जाएगा। भयंकर सूखा पड़ेगा, जिससे फसलें नहीं पनप पाएंगी और करोड़ों.अरबों लोग भूख से मारे जाएंगे।

क्या हुआ था जब हिरोशिमा पर गिरा था परमाणु बम

रिपोर्ट्स के मुताबिक जब हिरोशिमा पर परमाणु बम गिरा तो उसकी 30 प्रतिशत आबादी ;70. 80 हजार लोग, पलभर में मारे गए और बाकी 70 हजार घायल हो गए। अनुमान लगाया जाता है कि 20 हजार जापानी मिलिट्री के सैनिक भी मारे गए थे। अमेरिका के सर्वे में सामने आया था कि शहर का 4.7 स्क्वेयर मील का क्षेत्रफ्ल बर्बाद हो गया था। जापान के अधिकारियों के मुताबिक हिरोशिमा की 69 प्रतिशत इमारतें तबाह हो गईं। हिरोशिमा में 90 प्रतिशत डॉक्टर्स और 93 प्रतिशत नर्स मारे गए या घायलों में शामिल थे।

वहीं नागासाकी में हिरोशिमा से ज्यादा शक्तिशाली परमाणु बम गिराया गया थाए लेकिन पहाड़ होने के कारण नागासाकी में रेडिएशन 6.7 किलोमीटर तक ही फैली थी। फ्रि भी हजारों लोग इस हमले में मारे गए। बताया जाता है कि जापान के दोनों शहरों के परमाणु हमले में 2 लाख से ज्यादा लोगों ने जान गंवाई थी।

पहला विश्व युद्ध

पहला विश्व युद्ध जुलाई 1914 से शुरू होकर नवंबर 1918 को जर्मनी के समर्पण के साथ खत्म हुआ था। लगभग साढ़े चार सालों तक चले इस वॉर जिम्मेदारी वैसे तो किसी ने नहीं ली, लेकिन इसकी वजह ऑस्ट्रिया.हंगरी साम्राज्य के उत्तराधिकारी आर्चड्यूक फर्डिनेंड की हत्या को माना जाता है।बोस्निया के दौरे पर फर्डिनेंड की हत्या हो गई थी, जिसका आरोप सर्बियाई सरकार पर लगाया गया। महीनेभर में ही आस्ट्रिया ने उसके खिलाफ जंग शुरू कर दी और धीरे.धीरे दुनियाभर के देश इसमें शामिल होते चले गए। इस तरह दो देशों की जंग विश्व युद्ध में बदल गई। माना जाता है कि इस भीषण युद्ध में करीब एक करोड़ लोगों की मौत हुई।

दूसरा विश्व युद्ध

दूसरे विश्व युद्ध के बीज, पहले युद्ध के परिणामों में ही छिपे थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद सभी बड़े देशों ने जर्मनी को मजबूर किया और उसपर कई सारे प्रतिबंध लगाए। उस दौरान अडोल्फहिटलर नाजी पार्टी के नेता के तौर पर उभर रहे थे। उन्होंने तय किया कि वो इसे नहीं भूलेंगे। साल 1933 में हिटलर के देश का सैन्य शासक बनने के बाद ऑस्ट्रिया भी उनके पाले में चला गया। मार्च 1939 में हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया पर हमला कर उसपर कब्जा कर लिया और वहां से फिर पोलैंड पर हमला कर दिया। यहीं से दूसरा विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया। इस दौरान दुनियाभर के बड़े देश दो हिस्सों में बंट गए। एक तरफ अमेरिका,फ्रांस, ब्रिटेन और सोवियत संघ जैसे बड़े देश थे और दूसरी तरफजर्मनी, जापान और इटली। जर्मनी की हार होते देख हिटलर ने खुदकुशी कर ली और उधर अमेरिका के न्यूक्लियर हमले के बाद जापान ने भी हथियार डाल दिए। इस तरह से सितंबर 1945 को दूसरा विश्व युद्ध समाप्त हो सका।

जलवायु परिवर्तन पर चिंता जताने दुबई में एकमंच पर जुटे देशभर के 200 देशों के शीर्ष नेता

हलधर किसान (अंतर्राष्ट्रीय)। कॉप-28 जलवायु को लेकर संयुक्त राष्ट्र की 28वीं बैठक दुबई में आयोजित की गई। इस वार्षिक बैठक में जलवायु परिवर्तन को रोकने और भविष्य में इससे निपटने के लिए क्या तैयारियां पर चर्चा हो रही है। इस सम्मेलन में करीब 200 देशो के नेताओं को बुलाया गया है। नेताओं के अलावा पर्यावरण के लिए काम करने वाली संस्थाएं, मानवाधिकार समूह भी इसमें हिस्सा ले रहे हैं। दुनियाभर में बीते समय में जलवायु में आए परिवर्तन को देखते हुए ये सम्मेलन काफी अहम है।

संयुक्त अरब अमीरात में अध्यक्षता में आयोजित इस शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शामिल हुए। उन्होंने जलवायु परिवर्तन पर गंभीरता दिखाने की अपील करते हुए कहा कि कार्बन उत्सर्जन में 45 फीसद की कमी लाना जरूरी है। 2030 तक कार्बन उत्सर्जन घटाने पर तत्परता से काम किए जाने की जरूरत है, इसके लिए सभी देशों को एक.दूसरे का साथ देना चाहिए। कार्बन क्रेडिट का दायरा बहुत सीमित है। कार्बन क्रेडिट की व्यवस्था में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना की भी कमी है। हमें समग्र रूप से एक नई फिलॉसॉफी पर जोर देना पड़ेगा।उन्होंने कहा ग्लोबल साउथ की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए जलवायु वित्त और प्रौद्योगिकी आवश्यक है। बैठक के दौरान कृषि, खाद्य और जलवायु कार्रवाई घोषणापत्र पर 134 वैश्विक नेताओं ने हस्ताक्षर किए हैं। जलवायु परिवर्तन से निपटने के दौरान खाद्य सुरक्षा का समर्थन करने के लिए 250 करोड़ डॉलर से अधिक की धनराशि जुटाने और जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर खाद्य प्रणालियों के नवाचार के लिए यूएई और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के बीच एक नई साझेदारी की भी घोषणा की गई। विश्व जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन के एक विशेष सत्र में टिकाऊ कृषि, लचीली खाद्य प्रणाली और जलवायु कार्रवाई पर काप.28 यूएई घोषणापत्र का एलान किया गया था।

यूएई ने 30 अरब डॉलर के फंड की घोषणा की

एजेंसी से मिली जानकारी अनुसार, संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने जलवायु कोष में 3.000 करोड़ डॉलर का योगदान देने की घोषणा की। इस कोष का लक्ष्य दशक के अंत तक 25.000 करोड़ डॉलर का निवेश हासिल करना है। कॉप.28 प्रेसीडेंसी के एक बयान में कहा गया कि इस फंड से 2500 करोड़ डॉलर जलवायु कार्रवाई और 500 करोड़ डॉलर ग्लोबल साउथ में निवेश के मद में दिया जाएगा।

सद्‌गुरु बोले.मिट्टी ही परम एकजुटता की सूत्रधार

विश्व जलवायु एक्शन समिट दुबई को मृदा बचाओ आंदोलन के संस्थापक सद्‌गुरु जग्गी वासुदेव ने भी संबोधित किया। सद्‌गुरु ने कहा कि इस दुनिया में मिट्टी ही है तो ग्लोबल यूनिटी करने में सक्षम है। हम क्या हैं? कौन हैं ? यह मायने नहीं रखता। मायने रखता है कि हम सब एक ही मिट्टी के हैं। मिट्टी को पुनर्जीवित करने की नीतियां लागू करने के लिए धार्मिक लीडर लोगों और नीति निर्माताओं को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

मेक्सिको की संसद में दिखाए गए एलियंस के शव

डीएनए टेस्ट से हैरान रह गए वैज्ञानिक, नई खोज में दावा

हलधर किसान 88174 02860

हलधर किसान, न्यू मेक्सिको (अंतर्राष्ट्रीय)। मैक्सिको सिटी, पेरू में खोजी गई दो 'गैर.मानव' ममियों से जुड़ा रहस्य अब और भी ज्यादा गहराता जा रहा है। इसके डीएनए का विश्लेषण करने वाले एक्सपर्ट्स का कहना है कि इसका 30 फीसदी हिस्सा मनुष्य नहीं बल्कि अज्ञात प्रजाति से मेल खाता है। यूएफओ से जुड़ी थ्योरी देने वाले जोस जेमी मौसन इन अवशेषों का डीएनए विश्लेषण करने वाली टीम का हिस्सा थे। उन्होंने कहा कि डीएनए विश्लेषण में पाया गया कि इसकी 30 फीसदी आनुवंशिक सामग्री किसी भी ज्ञात प्रजाति से मेल नहीं खाती।

हाल ही में मेक्सिको की संसद में दिखाए गए एलियन की लाश को लेकर एक बार फिर चर्चा होने लगी है। डीएनए विश्लेषण के बाद यह साफहो गया है कि ये मृत शरीर किसी इंसानी प्रजाति की नहीं, बल्कि यह पूरी तरह से अज्ञात है, क्योंकि परीक्षण इंसानों के क्छ। से बिल्कुल मेल नहीं खाता है। बता दें कि जाने.माने यूएफओ विशेषज्ञ और पत्रकार जैमे मौसन ने दावा किया था कि उन्हें पेरू में एक ममीकृत एलियन के अवशेष मिले हैं, जो दूसरे ग्रह से आया है। मौसन द्वारा लाई गई शोधकर्ताओं की एक टीम ने अवशेषों पर डीएनए परीक्षण किया,

दिखाए गए शव को क्यों कहा गया एलियन?

डेलीमेल. कॉम की एक रिपोर्ट के अनुसार, शवों का नाम क्लारा और मौरिसियो दिया गया है। नेशनल ऑटोनॉमस यूनिवर्सिटी ऑफ मैक्सिको (यूएनएएम) द्वारा इनकी कार्बन डेटिंग की गई, जिससे पता चला कि वे 1.000 साल से अधिक पुराने हैं, उनके तीन अंगुली वाले हाथ हैं और उनके दांत नहीं हैं। मौसन ने इस बात पर प्रकाश डाला कि ये प्रजाति हमारे पृथ्वी की नहीं है, यह डायटम खदानों में पाए गए थे, जो बाद में जीवाश्म बन गए। उन्होंने कहा वे एलियंस हैं या नहीं, हम नहीं जानते, लेकिन वे बुद्धिमान थे और वे हमारे साथ रहते थे। मैक्सिको की कांग्रेस में कुछ समय पहले यह कथित एलियन ममी रखे गए थे। इस दौरान मौसन के साथ अन्य शोधकर्ताओं ने गवाही दी थी कि यह एक ही कंकाल है। हालांकि इस बारे में कोई स्पष्टता नहीं है कि आखिर छोटी एलियन लाशों का 70 फीसदी डीएनए किससे मेल खाता है।

टेस्टिंग में ब्रेन.स्किन टिश्यू के सैंपल मिले

मेक्सिको की नेशनल आटोनॉमस यूनिवर्सिटी के इंस्टिट्यूट ऑफ एस्ट्रोनॉमी की वैज्ञानिक जुलिएटा फिएरो के मुताबिक ये पूरा मामला कोई मिस्ट्री नहीं है। उन्होंने कहा यूएनएएम की तरफ से सैंपल की जांच में कार्बन.14 पाया गया है। इससे साबित होता है कि ये सैंपल अलग.अलग टाइम पीरियड की ममीज के ब्रेन और स्किन टिश्यू के हो सकते हैं। इन सैंपल्स में फिलहाल ऐसा कुछ भी नहीं मिला है, जो धरती के जीवों से अलग हो।

जिससे पता चला कि 30 प्रतिशत अज्ञात है और किसी भी ज्ञात प्रजाति से मेल नहीं खाता है। मौसन का दावा है कि ये निष्कर्ष इन अवशेषों के लिए सबूत है कि ये दूसरे प्रजाति हैं, जो किसी दूसरे ग्रह से आए हैं। हालांकि, शेष 70 प्रतिशत डीएनए संरचना का खुलासा नहीं किया गया है। ब्रह्मांड में हम अकेले नहीं यह नमूने हमारे स्थलीय विकास से जुड़े नहीं हैं। वे यूएफओ क्रेश में खोजे गए प्राणी नहीं थी। इसकी जगह वह एक खदान में पाए गए और बाद में ममियों में बदल गए। उन्होंने आगे कहा श्लोगों को गैर मानवीय टेक्नोलॉजी और जीवन के बारे में जानने का हक है। उन्होंने कहा, यह वास्तविकता हमें विभाजित करने की जगह मानवता को एकजुट करती है। क्योंकि हम इस ब्रह्मांड में अकेले नहीं और सच्चाई को अपनाना चाहिए।

एलियन के नहीं हैं फेफड़े

जेमी मौसन ने मैक्सिको की संसद के निचले सदन में तस्वीरें और एक्स रे दिखाए थे। जिसे उन्होंने इस बात का सबूत बताया था कि एलियन के फेफड़े और पसलियां नहीं हैं। पेरू के इका में सैन लुइस गोंजागा नेशनल यूनिवर्सिटी के मानवविज्ञानी रोजर जुनिगा ने अपनी गवाही में इन्हें असली बताया था। उन्होंने आगे कहा, इन प्राणियों के भौतिक और जैविक गठन में किसी भी तरह का मानवीय हस्तक्षेप नहीं है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि वह प्राणियों की उत्पत्ति के बारे में नहीं जानते। वहीं, वैज्ञानिकों का कहना है कि यह एक पब्लिसिटी स्टंट है। दुनिया में एलियंस का कोई वजूद नहीं है। लाश दिखाए जाने पर वैज्ञानिकों ने दावा किया कि यह प्राचीन डमी हो सकती है, जो किसी खास अनुष्ठान के लिए जानवरों की लाशों और अल्पाका खोपड़ी से मिलाकर बनाई गई है।

क्या आप अपना खुद का व्यापार स्थापित करना चाहते है ?

मध्य भारत की तेजी से बढ़ती हुई रिटेल चेन आउटलेट बीज भंडार की फ्रेंचाइजी ले और बने अपनी दुकान के मालिक

बीज भण्डार™

बीज भंडार की फ्रेंचाइजी लेने के लिए संपर्क करे।

जैन बीज भंडार एग्रो. प्रा. लि, खरगोन मोबा. 8305103633

उन्नत खेती के उत्तम बीज

स्वामी विवेक जैन, प्रकाशक विवेक जैन, मुद्रक कैलाश महाजन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित एवं 26/1, विवेकानंद कॉलोनी, वार्ड नंबर 5, खरगोन से प्रकाशित, संपादक विवेक जैन।.RNI No. MPHIN/2022/85285, मोबा. नं.98262 25025, 94254 89337 (समस्त प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)।